17 जुलाई 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जिनवाणी चैनल पर

प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 8 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (द्वितीय), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

देश-विदेश में चलो शिखरजी की धूम

ज्ञानतीर्थ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखरजी की पावन धरा पर दिनांक 9 अक्टूबर से 14 अक्टूबर 2016 तक आयोजित होने जा रहे ''समयसार मंडल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर'' के लिये देश-विदेश में हर्षोल्लास का वातावरण छा गया है। सभी साधर्मियों ने 30 जून के पूर्व ही अपना आरक्षण करवा लिया है एवं उस अपूर्व क्षण का इंतजार कर रहे हैं, जब सिद्धों की पावनभूमि पर इस अद्भुत कार्यक्रम के हम सभी साक्षी होंगे।

क्योंकि इसमें होगा -

1. **देश-विदेश के हजारों साधर्मियों का महाकुम्भ।**
2. **1 हजार से भी अधिक विद्वानों का अद्भुत समागम।**
3. **1008 इंद्र-इंद्राणियों द्वारा भव्य समयसार विधान**
4. **प्रवचन, कक्षा, गोष्ठी के माध्यम से बहेगी तत्त्वज्ञान की आध्यात्मिक गंगा।**
5. **रात्रि में विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन**
6. **14 अक्टूबर को अनंत तीर्थंकर भगवन्तों की निर्वाण भूमि की सामूहिक वन्दना**

'तो अब इन्तजार किसलिये....???'

हो जाइये तैयार आप भी महामहोत्सव के साक्षी बनने के लिये।

- रूपेन्द्र शास्त्री

फैडरेशन की शाखाओं से...

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का 40वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सोमवार, दिनांक 10 अक्टूबर को तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में संपन्न होने जा रहा है।

फैडरेशन की सभी शाखाओं से अपेक्षा है कि वे दिनांक 15 सितम्बर तक अपनी शाखा की गतिविधियों की रिपोर्ट बनाकर केन्द्रीय कार्यालय जयपुर भिजवा देवें। आपसे प्राप्त जानकारी का उपयोग अधिवेशन के अवसर पर तो किया ही जायेगा, साथ ही शाखाओं व पदाधिकारियों के नामोल्लेख के साथ जैनपथप्रदर्शक में भी प्रमुखता के साथ प्रकाशित किया जायेगा।

यदि कोई विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित किया गया हो तो उसके फोटो भी भिजवाने का प्रयत्न करें। **- महामंत्री**

निजात्म कल्याण शिविर संपन्न

सूरत (गुज.) : यहाँ दीवान ब्रदर्स द्वारा दिनांक 18 से 26 जून तक निजात्म कल्याण शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा दोनों समय कक्षायें ली गई, जिसमें अनेकान्त-स्याद्वाद, निश्चय-व्यवहार, पाप-पुण्य, षट् लेश्या एवं कर्मों के उत्कर्षण-अपकर्षण व उदीरणा आदि विषयों को अत्यंत सरल व रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया। अन्तिम दो दिन डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया एवं विदुषी स्वानुभूति जैन द्वारा पांच लब्धियों पर व्याख्यान का लाभ मिला।

अन्तिम दिन श्री विपिनजी शास्त्री मुम्बई ने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का परिचय दिया और इसकी स्वर्ण जयंती के अवसर पर सम्मेदशिखरजी में आयोजित श्री समयसार मंडल विधान में पधारने का आमंत्रण दिया।

शिविर में लगभग 700 साधर्मीजन पधारे, जिनमें से अधिकांश साधर्मियों ने पहली बार तत्त्वज्ञान का लाभ लिया। ज्ञातव्य है कि सूरत में बहुत समय पश्चात् इसप्रकार का आयोजन किया गया, जिसकी सभी ने भरपूर प्रशंसा की।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

39वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 31 जुलाई से मंगलवार 9 अगस्त, 2016 तक)

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

संपर्क सूत्र - पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन : 0141-2705581, 2707458

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

''पुण्योदय से प्राप्त संयोगों की अनुकूलता में जो व्यक्ति जितना हर्षित होता है, प्रसन्न होता है; पापोदयजनित प्रतिकूलताओं में उसे उतना ही अधिक दु:ख होता है, खेद होता है। वस्तुत: अनुकूल-प्रतिकूल संयोगों में तत्त्वज्ञान के बल से समभाव रखना, साम्यभाव से तटस्थ रहना ही सुखी होने का सच्चा उपाय है।''

इस तथ्य से अनभिज्ञ सेठ सिद्धोमल ने यद्यपि अपने प्रिय पुत्र संजू से संबंध विच्छेद की घोषणा करके संपत्ति तो बचा ली थी, पर इससे उनकी विपत्तियों का अन्त नहीं हुआ था, विपत्तियाँ कम भी नहीं हुई थी, बल्कि विपत्तियाँ तो और अधिक बढ गई थी; क्योंकि जिसे बारह वर्ष की कठिन साधना के बाद बड़ी दुर्लभता से पुत्र का मुँह देखने को मिला हो, उसका हर्षित होना तो स्वाभाविक था ही, पर जिसे उसी इकलौते दुर्लभ प्रिय पुत्र का परिस्थितिवश सदा के लिये संबंध विच्छेद करना पड़ा हो, उसके दु:ख का भी क्या ठिकाना ?

सेठ सिद्धोमल के दु:ख का कोई पार नहीं था; क्योंकि ऐसी दुर्लभता से प्राप्त पुत्र से सदा के लिये संबंध विच्छेद करके उसे दर-दर की ठोकरें खाने को छोड़ देना कोई सहज बात नहीं थी। कितने अन्तर्बाह्य संघर्ष करने पड़े थे उन्हें ? छाती पर पत्थर रखकर जिसने यह कार्यवाही की होगी, उसके दिल पर क्या बीती होगी ? यह या तो भुक्तभोगी ही जान सकता है या फिर सर्वज्ञ भगवान।

'जिसके पांव फटी न बिंवाई, वह क्या जाने पीर पराई।'

संजू की माँ के तो आज तक आँसू ही नहीं थमे थे, पिताजी भी कम दु:खी नहीं थे। यद्यपि स्त्रियों की तरह उनके आँसू बाहर नहीं टपक रहे थे, पर वे भी आँसू पी-पीकर ही अपनी अशांति की आग बुझा रहे थे।

बिना कारण अपने शरीर का उपयोगी अंग काटकर कौन फेंकना चाहेगा ? पर यदि कोई अंग सड़ गया हो और निरंतर मौत के मुँह में ले जा रहा हो, उस अंग के कट जाने से कितना भी दु:ख क्यों न हो ? उसे तो बिना मीन-मेख किए तुरंत कटवाना ही पड़ता है। उसके सिवाय जीवित रहने का अन्य कोई उपाय भी तो शेष नहीं है। ऐसी स्थिति में कोई करे तो करे भी क्या ? ठीक यही स्थिति सेठ सिद्धोमल की हो गई थी। उनका पुत्र संजू उनकी बालमनोविज्ञान विषयक अनभिज्ञता के कारण ही तो विद्रोही हुआ था। इसका उन्हें भी बहुत अफसोस था, पर अब वे करें तो करें भी क्या ? उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

उनकी इस छोटी-सी नासमझी का इतना बड़ा दंड देने पर भी उनके भाग्यविधाता को अभी संतोष नहीं हुआ था। सो आये दिन पुलिस की परेशानियाँ अलग झेलनी पड़ रही थीं। पुलिस को तो मानो चुगने के लिये हरा-भरा चनों का खेत मिल गया था, जिसे मन चाहा चोंटें जाओ और चुगे जाओ। जब भी मन चाहे सेठ सिद्धोमल की छाती पर बैठकर मनमाना होरा भून-भून कर खाओ।

पुलिस के सिपाहियों को जब कहीं कोई काम नहीं दिखा या हाथ तंग हुआ तो आ धमके सेठ सिद्धोमल के यहाँ उनके बेटे की कुशलक्षेम पूछने। जब भी जेब खाली हुई नहीं कि सबसे पहले उन्हें सेठ सिद्धोमल ही याद आते। यदि सेठ ने आनाकानी की तो दूसरे ही दिन सच्ची-झूठी रिपोर्ट बनाकर संजू थाने में पिट रहे होते और इसकी खबर उन तक जल्दी ही पहुँचा दी जाती, ताकि उसकी माँ सिर धुने और फिर उनकी तिजोरी खुले।

संजू को पुलिस के चक्कर से छुड़ाने के लिये अब तक वे लाखों रुपया लुटा चुके थे। उनकी इस पुत्रमोह की कमजोरी का पुलिस तो भरपूर लाभ उठा ही रही थी, समय-समय पर बिचौलिये भी संजू के सहयोग के नाम पर उनसे मुँहमांगा रुपया वसूला करते थे। **(क्रमश:)**

अनेक स्थानों पर तत्त्वप्रचार

राघौगढ (म.प्र.) में दिनांक 26 अप्रैल से 12 मई तक पण्डित रमेशजी शास्त्री जयपुर द्वारा समयसार के संवर अधिकार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त **आरौन (म.प्र.)** में दिनांक 1 से 11 जून तक प्रवचनों का लाभ मिला।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

31 जुलाई से 9 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
29 अगस्त से 5 सित.	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
6 से 15 सितम्बर	औरंगाबाद	दशलक्षण पर्व
9 से 14 अक्टूबर	सम्मेदशिखरजी	शिक्षण शिविर एवं समयसार विधान

स्वर्ण जयंती के मायने (8)

विदिशा में ऐतिहासिक स्वर्ण जयंती प्रशिक्षण शिविर के बाद

चलो शिखरजी !

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रबल तत्त्वप्रभावनायोग का ही प्रभाव है कि हम आत्मार्थियों के छोटे-छोटे प्रयत्न भी अनंतगुना होकर प्रतिफलित होते हैं।

विगत दिनांक 15 मई से 1 जून 2016 तक विदिशा नगर में आयोजित पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित 50वाँ स्वर्णजयंती प्रशिक्षण शिविर **ऐतिहासिक एवं अतिशय उपलब्धियों के साथ संपन्न हुआ, जिसमें देशभर से उमड़ पड़े विशाल आत्मार्थी जनसमुदाय के अतिरिक्त बड़ी संख्या में शिक्षणार्थी और संख्या का कीर्तिमान स्थापित करते हुये प्रशिक्षणार्थी इस प्रशिक्षण शिविर की विशिष्ट उपलब्धि रहे।**

इसी शृंखला में अब **आगामी 9 अक्टूबर से 14 अक्टूबर तक तीर्थाधिराज सम्मेदशिखर में आयोजित होने जा रहा 'श्री समयसार विधान'** एक नये इतिहास का सर्जन करने जा रहा है।

पण्डित टोडरमलजी के समय में जयपुर में मोतीडूंगरी (वर्तमान टोडरमल स्मारक भवन के निकट ही) पर आयोजित 'इन्द्रध्वज विधान' एक ऐतिहासिक घटना थी जो उस समय देश में व्याप्त पण्डित टोडरमलजी के प्रभामण्डल को इंगित करती है।

इतिहास में उल्लेख है कि उस समय किस प्रकार देशभर के गाँव-गाँव और नगर-नगर में हस्तलिखित आमन्त्रण पत्रिकाएँ भिजवायी गयी थी और उनमें निवेदन किया गया था कि इस पत्रिका की और नकलें बनवाकर आसपास के नगरों में भी भिजवायी जाएँ। इसप्रकार उस समय जयपुर में आयोजित इंद्रध्वज विधान मात्र एक स्थानीय कार्यक्रम ही नहीं वरन् एक देशव्यापी महाअभियान था।

उक्त विधान में देशभर के साधर्मियों की बड़ी संख्या में सहभागिता का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि इसका आयोजन जैन मंदिरों की नगरी जयपुर के किसी मंदिरजी के प्रांगण में नहीं, नगर के अंदर भी किसी विशाल मैदान में नहीं वरन् तत्कालीन जयपुर नगर से लगभग तीन किलोमीटर दूर जंगल में स्थित विशाल भूखण्ड पर किया गया था; क्योंकि नगर के अंदर स्थित विशालतम मैदान भी विधान में सम्मिलित विशाल जनसमुदाय को अपने में समाहित कर लेने के लिये अपर्याप्त थे। इसप्रकार हम कह सकते हैं कि वह कार्यक्रम देश ही नहीं काल की सीमाओं से भी परे लोकातीत कार्यक्रम था।

वर्तमान में **आगामी अक्टूबर माह में श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के स्वर्णजयंती वर्ष के उपलक्ष्य में श्री सम्मेदशिखरजी में आयोजित 'श्री समयसार विधान' भी पण्डित टोडरमलजी के समय में मोतीडूंगरी पर आयोजित 'श्री इंद्रध्वज मण्डल विधान' के समान ही ऐतिहासिक, लोकातीत और देश-काल की सीमाओं से परे एक अविस्मरणीय अनुभव होगा, इसमें कोई संदेह नहीं।**

कार्यक्रम के आयोजन से लगभग सात माह पूर्व ही प्रारम्भ कर दी गई इस महान आयोजन की देशव्यापी तैयारियों और समाज की ओर से मिले गर्मजोशी भरे प्रतिसाद को देखते हुए इस आयोजन की महानता की कल्पना सहज ही की जा सकती है।

टोडरमल स्मारक **ट्रस्ट के पदाधिकारियों के अतिरिक्त विशाल संख्या में देशभर में व्याप्त पण्डित टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातकों की स्वत: स्फूर्त प्रेरणा द्वारा संचालित इसका प्रचार अभियान भी बड़ा अद्भुत रहा।**

उक्त सभी लोगों ने गाँव-गाँव जाकर तथा देश में संपन्न हो रहे विशाल कार्यक्रमों में शामिल होकर इस कार्यक्रम में शामिल होने का आमंत्रण सकल समाज को दिया, जिसका बड़ा गर्मजोशीभरा प्रतिसाद मिला।

वर्तमान के वरदान (इसप्रकार के उद्देश्यों के लिये प्रयोग किये जाने पर) वॉट्स एप पर संचालित दीर्घ व सघन प्रचार अभियान ने इसे विशेष बल प्रदान किया। **मानो सारा देश और समाज ही सम्मेदशिखरमय और स्वर्णजयंतीमय हो गया।**

प्रतिदिन ही देशभर से बड़ी संख्या में आवास आरक्षण फार्म भरकर आने लगे। आने वालों की बढती संख्या देखकर हमें बारम्बार अपनी व्यवस्थाओं की समीक्षा करनी पड़ी, हालात तो ऐसे थे कि हमें समय से पूर्व ही आवास आरक्षण बंद कर देने के लिये विवश होना पड़े, पर नहीं, हम वचनबद्ध थे। आवास आरक्षण की अंतिम तिथि 30 जून पूर्व घोषित थी, समय से पूर्व इसे बंद करके हम इच्छुक और उत्सुक आत्मार्थियों को निराश करने का साहस नहीं कर सके। अंतत: चार-चार बार हमारी व्यवस्थापक टीम को सम्मेदशिखरजी जाकर आवास व्यवस्थाओं का विस्तार करना पड़ा।

हम आभारी हैं, सम्मेदशिखरजी स्थित समस्त धर्मशालाओं एवं अन्य आवास स्थलों के पदाधिकारियों और व्यवस्थापकों के जिन्होंने हृदय की विशालता प्रदर्शित करते हुये हमें यथासम्भव अधिकतम आवास स्थल प्रदान किये।

हमें अपने कार्यक्रम के आयोजन स्थल में भी परिवर्तन करना पड़ा और अंतत: हमारी खोज उसी मैदान तक पहुंचकर पूरी हुई जहां पर मात्र कुछ ही वर्ष पूर्व कुन्दकुन्द कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट द्वारा आयोजित विशाल श्री दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव अतिशय सफलतापूर्वक सानन्द संपन्न हुआ था।

अंतत: 30 जून का वह दिन भी आ पहुंचा जब हमने पाया कि लगभग 6500 लोगों के आवास आरक्षण आवेदन प्राप्त हो चुके हैं और

अब भी अनेकों तत्त्वरसिक लोग अपने व्यक्तिगत संपर्कों का उपयोग करते हुये निरन्तर हम तक पहुँच रहे हैं। **(हम उनसे क्षमाप्रार्थी हैं)**

सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि सीमित साधनों की उपलब्धता वाले श्री सम्मेदशिखरजी तीर्थ में इसप्रकार की विशाल व्यवस्थाएँ किस प्रकार का दु:साध्य कार्य है, तथापि चिंतित होने की आवश्यकता नहीं, **हम आप सभी को यथासंभव उत्कृष्टतम आवास एवं भोजन व्यवस्था के साथ अत्यन्त उच्च कोटि के कार्यक्रम प्रदान करने के लिये कृतसंकल्प हैं।**

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा नवरचित श्री समयसार विधान (सामान्यार्थ सहित) के प्रथम बार आयोजन के अतिरिक्त उच्च कोटि के लोकप्रिय प्रवचनकारों के प्रवचनों, बाल व प्रौढ कक्षाओं एवं विशेषरूप से तैयार किये गये उच्चकोटि के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का लाभ भी हम सभी को प्राप्त होगा।

वर्तमान तत्त्वप्रभावना में जिनका महत्वपूर्ण योगदान है ऐसे **महानुभावों एवं संस्थाओं का गरिमापूर्ण अभिनन्दन एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन भी आयोजित किया जायेगा।**

1008 इन्द्र–इन्द्राणियों की सहभागिता एवं देशभर से आये सहस्राधिक विद्वानों का समागम इस आयोजन को एक ऐसी गरिमा प्रदान करेगा, इतिहास में जिसकी तुलना संभव नहीं होगी।

जिन आगंतुकों के आवास आरक्षण फार्म हमें प्राप्त हुये हैं, उनके फोटो सहित पहिचानपत्र एवं उनके आवास स्थल की सूचना यथासमय प्रेषित कर दी जायेगी, ताकि आप सभी सीधे ही अपने आवास स्थल पर पहुँच सकें।

पण्डित टोडरमलजी की महान परम्परा में और पूज्य गुरुदेवश्री के महान तत्त्वप्रभावनायोग में आयोजित यह महान समयसार विधान सचमुच एक ऐतिहासिक आयोजन साबित होगा इसमें कोई संदेह नहीं है।

हम सभी, सम्पूर्ण देश की समस्त संस्थाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली 'श्री टोडरमल स्मारक स्वर्ण जयंती वर्ष समिति' समस्त शास्त्री स्नातकगण एवं श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के सभी पदाधिकारी एवं ट्रस्टीगण उक्त अवसर पर आपकी सहभागिता की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

आइये और एक स्वर्णिम युग की स्वर्णजयन्ती के इस भव्य आयोजन में भाग लेकर इतिहास के अंग बनिए।

शोक समाचार

खनियांधाना (म.प्र.) निवासी श्रीमती विद्यादेवी जैन धर्मपत्नी स्व. पण्डित पन्नालालजी गजया का दिनांक 9 जुलाई को जबलपुर में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप नंदीश्वर विद्यालय एवं विद्यापीठ की संस्थापिका थीं।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

भूलसुधार – विदिशा प्रशिक्षण शिविर में हुये फैडरेशन अधिवेशन में मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा उपस्थित थे। विगत 17 जून के अंक में प्रकाशित समाचार में यह नाम छूट गया था।

जैनत्व जागरण शिविर संपन्न

रायपुर (छत्तीसगढ) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में छत्तीसगढ व मध्यप्रदेश के विभिन्न 15 स्थानों पर तृतीय जैनत्व जागरण संस्कार शिविर एवं रायपुर में तृतीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन दिनांक 3 से 9 जून तक किया गया।

इस अवसर पर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, आचार्य अकलंकदेव शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा एवं आचार्य धरसेन मुमुक्षु आश्रम कोटा के विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ। शिविर में विभिन्न स्थानों पर लगभग 1200 साधर्मियों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये। यह शिविर रायपुर के अतिरिक्त रायपुर (शंकरनगर), तिल्दा,कुनकुरी, अंबिकापुर, शहडोल, सांकरा, बगीचा, नैला, वनखेड़ी, बलौदाबाजार, जैतहरी, रायगढ, मनेन्द्रगढ, खैरागढ आदि स्थानों पर उत्साहपूर्वक लगाया गया।

बाल संस्कार शिविर के अन्तर्गत ब्र. सुनीलजी शिवपुरी, पण्डित अशोकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित संदीपजी शास्त्री शहपुरा एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री मड़देवरा द्वारा बच्चों को जैनधर्म के मूलभूत सिद्धांतों का ज्ञान कराया गया। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। शिविर के अन्तिम दिन 35 सदस्यों के साथ अ.भा. जैन युवा फैडरेशन का गठन किया गया, जिसमें सर्वसम्मति से श्री प्रकाशचंदजी जैन पंडरी को अध्यक्ष, श्री अशोकजी जैन घुवारा को सचिव, श्री नितिनजी शास्त्री खड़ैरी को प्रांतीय सचिव का पदभार दिया गया।

शिविर का संयोजन पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित नितिनजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित तन्मयजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मड़देवरा, पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा ने एवं निर्देशन श्री अशोकजी जैन घुवारा ने किया।

विशिष्ट ज्ञानगोष्ठी संपन्न

मैनपुरी (उ.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा श्री दिगम्बर जैन आदिनाथ जिनालय में दिनांक 1 मई से 15 जून तक ज्ञानगोष्ठी का विशिष्ट आयोजन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर दिनांक 1 से 15 मई तक पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा गुणस्थान विषय पर विशिष्ट कक्षाओं का लाभ मिला। दिनांक 1 मई से 15 जून तक ब्र. केशरीचंद्रजी धवल द्वारा प्रवचनसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। कार्यक्रम में सैकड़ों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

– अक्षय जैन

आगामी कार्यक्रम

गुरुदेवश्री के पुण्य–प्रभावना योग में ''मंगल वाणी जिनप्रवचन रहस्य शिविर'' का आयोजन दिनांक 31 जुलाई से 10 अगस्त 2016 तक करेली (म.प्र.) स्थित सीमंधर जिनालय में किया जा रहा है, जिसमें पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, पण्डित रजनीभाई दोशी आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त होगा। आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

जैनदर्शन एवं व्यक्तित्व विकास शिविर संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ रामपुरा स्थित श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन में श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में दिनांक 5 से 12 जून तक युगलजी की स्मृति में 24वाँ जैनदर्शन एवं व्यक्तित्व विकास शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर पण्डित विकासजी छाबड़ा, इन्दौर द्वारा प्रात: प्रवचनसार एवं सायंकाल जीवसमास पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित सचिनजी शास्त्री सागर, पण्डित अनुभवजी शास्त्री झालावाड़, पण्डित चेतनजी शास्त्री झालावाड़ एवं स्थानीय विद्वानों द्वारा बालकों की कक्षा ली गई। महिलाओं की कक्षा श्रीमती सारिका छाबड़ा ने ली।

दिनांक 5 जून को ध्वजारोहण श्री चौथमलजी लक्ष्मीलालजी बाबरिया ने एवं शिविर-उद्घाटन श्री प्रेमचंदजी बजाज ने किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री राजेन्द्रकुमारजी बज, मुख्य अतिथि श्री पवनजी जैन (अति.पुलिस अधीक्षक) एवं विशिष्ट अतिथि श्री बालचंदजी पटवारी व श्री तेजमलजी पटवारी थे। मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री ज्ञानचंदजी जैन ने युगलजी का स्मरण करते हुये कहा कि इस शिविर प्रारम्भ युगलजी द्वारा 24 वर्ष पूर्व किया गया था। दिनांक 8 व 9 जून को पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री द्वारा श्रुतस्कंध मण्डल विधान कराया गया। अन्तिम दिन जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई। जुलूस के पश्चात् शिविर का समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण समारोह हुआ। इसमें अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन, मुख्य अतिथि श्री वीरेन्द्रकुमारजी हरसौरा व श्री प्रकाशचंदजी झांझरी उज्जैन एवं विशिष्ट अतिथि श्री रूपचंदजी जैन थे।

शिविर में लगभग 300 से अधिक साधर्मियों ने लाभ लिया। कार्यक्रम में वीरवनिता संघ महिला मण्डल का विशेष सहयोग रहा। निर्देशन एवं संचालन श्री चिन्मयजी जैन एवं पण्डित चैतन्यजी शास्त्री द्वारा किया गया।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में -

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में सत्र 2016-17 में होने वाली साप्ताहिक गोष्ठियों का औपचारिक उद्घाटन दिनांक 3 जुलाई को किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (प्राचार्य) उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील (उपप्राचार्य), डॉ.दीपकजी वैद्य, श्रीमती कमला भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल, पण्डित श्रीमंतजी नेज, पण्डित गोमटेशजी शास्त्री, पण्डित उदयजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित गौरव उखलकर आदि विद्वानों के अतिरिक्त श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री शांतिलालजी अलवर, श्री ताराचंदजी सोगानी भी उपस्थित थे।

उद्घाटन के पश्चात् 'हमारा महाविद्यालय' विषय पर गोष्ठी प्रारंभ हुई, जिसमें 7 विद्यार्थियों ने अपना वक्तव्य दिया। मंगलाचरण विजय जैन सिमरिया ने एवं संचालन ऋषभ जैन दिल्ली व स्वप्निल जैन भोपाल (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

स्वर्ण जयंती गीत

- राजकुमारजी शास्त्री

वीतराग वाणी के पोषक, जयपुर में थे टोडरमल।
नाना विघ्न-बाधायें आयीं, फिर भी गिरिवत् रहे अचल।।
मोक्षमार्ग का किया प्रकाशन, मोह तिमिर का किया विनाश।
सम्यक् ज्ञान चंद्रिका रचकर, सम्यग्ज्ञान का किया प्रकाश।।
कहान गुरु को मिला हाथ में, टोडरमल का अनुपम ग्रंथ।
पढकर मोहित होकर बोले, सत्य पंथ है इक निर्ग्रन्थ।।
टोडरमल ने काम किया वह करता है जो मोह को बंद।
गोदिका गोत्रज टोडरमल थे, सुनकर प्रमुदित पूरनचंद।।
उत्साहित हो जयपुर में तब, भव्य भवन की रचना की।
नाम रखा टोडरमल स्मारक, ज्ञानप्रचार की भावना थी।।
डॉक्टर भारिल्ल जब यहाँ आये, ज्ञानप्रचार की अलख जगी।
महाविद्यालय साहित्य प्रकाशन, से मोह निशा है तुरत भगी।।
देश-विदेश में घूम-घूमकर, दादा ने फैलाया तत्त्वज्ञान।
यदि स्मारक न होता तो, हम सब रह जाते अनजान।।
देव-धर्म-गुरु हैं उपकारी, उपकारक हैं टोडरमल।
गुरु कहान अरु स्मारक है उपकारी, नाशक है जो मिथ्यामल।।
स्मारक की स्वर्ण जयंती, छाया चहुँ दिशि में है हर्ष।
करें समर्पण तन-मन-धन सब, सब जन का हो नव उत्कर्ष।।

स्वर्ण जयंती गीत

- गणतंत्र शास्त्री, आगरा

भूत भविष्यत् वर्तमान का स्वर्ग देखना तो आओ
चलते फिरते आगम लखना, तो दौड़े-दौड़े आओ
स्वर्ण जयंती वर्ष मनाओ,
हर्ष मनाओ, नाचो गाओ।।
अन्तस्तल में बसे पुरातन, कितने सत्य बदल डाले
बंजर भूमि में चेतनता के अंकुर हैं भर डाले।
अन्तर्तम में उठीं हिलोरें, तो मिलकर सब आओ
उपकारी का उपकार चुकाने, साथी हाथ बढाओ।। स्वर्ण जयंती...
भेदभाव की कलुषित परिणति, भेदज्ञान से विनश गई
तत्त्वज्ञान की परिणतियों में, चैतन्य शक्ति यूं मगन हुई
आत्मानुभूति का स्वर्णिम अवसर आकर लाभ उठाओ
तत्त्वप्रचार की पावन गंगा से स्वर्णिम भाग्य बनाओ।। स्वर्ण जयंती...
विद्वत्जन का वैभव देखो, जिनवाणी के अंचल में
प्रखर तर्क की भरी कसौटी, स्याद्वाद के संगम में
अनेकान्त की अद्भुत धारा, जीवन में अपनाओ
धरती पर है स्वर्ग स्मारक, शांति यहीं से पाओ।। स्वर्ण जयंती...

दृष्टि का विषय

27 सातवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यदि प्रतिवादी को यह बात स्वीकार हो कि गाय को अपने बछड़े से प्यार होता है, तभी प्रतिवादी को यह बात समझाई जा सकती है कि धर्मात्मा जीवों के भी आपस में प्रेम होना चाहिए।

इसलिए उदाहरण के संबंध में यह कहा जाता है कि उदाहरण लोकप्रसिद्ध होना चाहिए।

यही कारण है कि आचार्य अमृतचन्द्र ने भी काल की अखण्डता को समझाने के लिए प्रदेश की अखण्डता का उदाहरण चुना; क्योंकि वह सरल है। प्रदेशों के विस्तारक्रम को सभी लोग समझते हैं। यहाँ 'सभी' से तात्पर्य जैनधर्म को माननेवालों से है। यह उदाहरण, सरल इस अर्थ में भी है कि सभी लोगों को जैसी इच्छा, पर्याय का क्रम पलटने की होती है, वैसी इच्छा, प्रदेशों को पलटने की नहीं होती है।

आज तक कभी भी किसी को यह विकल्प नहीं आया कि जयपुर को दिल्ली के स्थान पर ले जाएँ अथवा अलवर का स्थानान्तरण करके उसे जयपुर की जगह पर ले आएँ। हम जयपुर का नाम अलवर और अलवर का नाम जयपुर तो रख सकते हैं या दिल्ली के पास नया जयपुर तो बना सकते हैं या हम उनका नाम तो बदल सकते हैं; लेकिन उनका स्थान नहीं बदल सकते हैं।

जब क्षेत्र को बदलने के बारे में किसी को कोई विकल्प नहीं होता है तो फिर पर्याय को बदलने के बारे में विकल्प क्यों उत्पन्न होता है?

हमें पर्याय को बदलने की इच्छा इसलिए होती है; क्योंकि आत्मा के प्रदेश (क्षेत्र) के पलटने से कोई बिगाड़-सुधार नहीं है अर्थात् यदि मस्तक में स्थित आत्मा के प्रदेश, पैर में चले जाए या पैर में स्थित प्रदेश, मस्तक में आ जायें तो हमें कोई दुःख नहीं होता है; इसलिए प्रदेशों के कारण कोई बिगाड़-सुधार नहीं है।

चूँकि पर्याय में बिगाड़-सुधार होता है अर्थात् कोई पर्याय, हमें दुःखमय लगती है और कोई पर्याय, हमें सुखमय लगती है, इसलिए पर्याय को बदलने की इच्छा होती है। लेकिन पर्याय को बदला नहीं जा सकता है। पर्याय के संबंध में जो हमारा अज्ञान है, उसे तो बदला जा सकता है; लेकिन पर्याय को नहीं। इसप्रकार आचार्य अमृतचन्द्र ने **विस्तारक्रम से प्रवाहक्रम का स्वरूप समझाया।**

विस्तारक्रम अर्थात् क्षेत्र का क्रम। विस्तार का अर्थ क्षेत्र या फैलाव होता है और इस फैलाव में एक निश्चित क्रम है, उसे बदला नहीं जा सकता है।

जैसे रूमाल को मोड़ने पर रूमाल के प्रदेशों में कोई फर्क नहीं आता है, वैसे ही मनुष्य की आत्मा को यदि चीटीं के शरीर में भी जाना पड़े तो भी आत्मा के प्रदेशों के क्रम में कोई अन्तर नहीं आएगा।

जिसप्रकार विस्तार के क्रम को 'क्षेत्र' कहते हैं, उसीप्रकार प्रवाह के क्रम को 'काल' कहते हैं। जिसप्रकार क्षेत्र से भगवान आत्मा अखण्ड है, उसीप्रकार काल से भी भगवान आत्मा अखण्ड है।

यदि हम लोगों को यह बात समझ में आ जाय कि 'काल से भगवान आत्मा अखण्ड है' तो फिर हम पर्याय को पलटने की बात सोचेंगे ही नहीं; क्योंकि उसमें पलटाव हो ही नहीं सकता है।

यह बात सुनकर बहुत लोग कहते हैं कि फिर हमारे पुरुषार्थ का क्या होगा ?

अरे भाई ! जिस दिन तुम्हें यह बात समझ में आएगी उसी दिन ही सच्चा पुरुषार्थ प्रकट होगा। अभी नरक-निगोद में डालनेवाला, संसार में घुमानेवाला पुरुषार्थ है। असली पुरुषार्थ तो उस दिन प्रकट होगा, जिस दिन लोग यह स्वीकार करेंगे कि भगवान आत्मा, काल से भी अखण्ड है अर्थात् पर्याय में परिवर्तन नहीं किया जा सकता है।

इसप्रकार प्रदेशों की अखण्डता को 'विस्तारक्रम' कहते हैं और वह प्रदेशों की अखण्डता द्रव्यार्थिकनय का विषय है। वे सभी प्रदेश अनादि-अनन्त और अखण्ड हैं। अखण्ड होने के बावजूद भी उसको अलग-अलग जाना भी जा सकता है। यदि उनको अलग-अलग नहीं जाना जा सकता होता तो हमने यह कैसे जाना कि उन प्रदेशों की संख्या असंख्य है, अनन्त नहीं। वे सभी अखण्ड होने के साथ, जुदे-जुदे भी हैं। यद्यपि वे जुदे हो नहीं सकते हैं, तथापि वे जुदे-जुदे हैं ह्न यह पर्यायार्थिकनय की दृष्टि है। **(क्रमशः)**

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का

40वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

सोमवार, दिनांक 10 अक्टूबर 2016

स्थान – तीर्थराज सम्मेदशिखर

(श्री समयसार विधान के अवसर पर)

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

अध्ययनहेतु प्रश्नोत्तर

नोट :- पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष का संचालन किया जा रहा है। इसकी विस्तृत रूपरेखा जैनपथप्रदर्शक के 2 अप्रैल 2016 के अंक में प्रकाशित की गई है। इस क्रम में तृतीय अध्याय के प्रश्नोत्तर प्रस्तुत हैं। जो भी भाई-बहिन इस योजना से जुड़ना चाहते हैं, वे 09785643202 पर संपर्क करें।

प्रश्न : तीसरे अध्याय में किस बात का निरूपण किया गया है ?

उत्तर : तीसरे अध्याय में संसार के दु:खों, उसके कारण एवं मोक्ष सुख का निरूपण किया गया है।

प्रश्न : संसार दु:ख और मोक्ष सुख के निरूपण की क्या आवश्यकता है?

उत्तर : जिस प्रकार वैद्य रोगी को उसके दु:खों का स्वरूप और कारण बताकर दु:ख दूर करने के सच्चे उपाय की प्रतीति कराता है, उसी प्रकार संसारी जीव को संसार दु:खों और उसके मूलकारणों की पहचान कराकर उसे दूर करने के सच्चे उपाय की प्रतीति कराये तो वह मोक्षमार्ग में प्रवृत्त होता है। इसलिये संसार दु:ख, उसके कारण और मोक्ष सुख का निरूपण यहाँ किया जा रहा है।

प्रश्न : संसार दु:ख का मूलकारण किसे कहा ?

उत्तर : संसार दु:ख का मूल कारण मिथ्यादर्शन, अज्ञान और असंयम को कहा।

प्रश्न : मिथ्यादर्शन, अज्ञान और असंयम की परिभाषा दीजिये।

उत्तर : मिथ्यादर्शन – दर्शनमोह के उदय से हुआ अतत्त्वश्रद्धान मिथ्यादर्शन है।

अज्ञान – मिथ्यादर्शन के निमित्त से क्षयोपशम ज्ञान यथार्थ वस्तुस्वरूप को नहीं जानता, अन्यथा ही जानता है, यही अज्ञान है।

असंयम – चारित्रमोह के उदय से हुआ कषायभाव असंयम है।

प्रश्न : ज्ञानावरण और दर्शनावरण का क्षयोपशम दु:ख का कारण क्यों है ?

उत्तर : इस जीव को त्रिकालवर्ती सर्वविषयों को ग्रहण करने की इच्छा है; परन्तु क्षयोपशम के कारण शक्ति किंचित् विषय को ग्रहण करने की है; अत: मोह के निमित्त से ज्ञानावरण-दर्शनावरण का क्षयोपशम दु:ख का कारण है।

प्रश्न : ज्ञानावरण-दर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न होने वाले दु:ख की निवृत्ति कैसे हो ?

उत्तर : विषयों को जानने की इच्छा मिट जावे अथवा संपूर्ण विषयों का युगपत् जानना होने लगे तब इस दु:ख की निवृत्ति हो; सो ऐसा तो मोह का अभाव होने पर, इच्छा का अभाव होने पर होता है और केवलज्ञान होने पर सर्व पदार्थों का जानना होता है। मोह के नाश और केवलज्ञान की उत्पत्ति का उपाय सम्यग्दर्शन है, अत: इस दु:ख की निवृत्ति का सच्चा उपाय सम्यग्दर्शनादि ही है।

प्रश्न : दर्शन मोह के उदय से यह जीव किस प्रकार दु:खी होता है ?

उत्तर : दर्शनमोह के उदय से मिथ्यात्व भाव होता है। उसके द्वारा जैसा इसके श्रद्धान है वैसा तो पदार्थ होता नहीं है और जैसा पदार्थ है वैसा यह मानता नहीं है। इसलिये इसको आकुलता ही रहती है।

प्रश्न : दर्शन मोह के उदयजन्य दु:ख की निवृत्ति का क्या उपाय है ?

उत्तर : जो वस्तु जैसी है उसे यथार्थ मानना और यह परिणमित कराने से अन्यथा परिणमित नहीं होगी - ऐसा मानना ही उस दु:ख के दूर होने का उपाय है। भ्रमजनित दु:ख को दूर करने का उपाय भ्रम दूर करना ही है। अत: इस दु:ख की निवृत्ति का सच्चा उपाय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र उत्पन्न करना ही है।

प्रश्न : चारित्र मोह और अंतराय के उदय में यह जीव किसप्रकार दु:खी होता है ?

उत्तर : चारित्र मोह के उदय से क्रोधादि कषायरूप तथा हास्यादि नोकषायरूप जीव के भाव होते हैं और अंतराय के उदय से शक्ति का घातपना होता है। यह जीव क्लेशवान होकर दु:खी होता हुआ नानाप्रकार के कुकार्यों में प्रवर्तता है; परन्तु उस कषाय की निवृत्ति के लिये यह जो उपाय करता है, उनकी सिद्धि इसके आधीन नहीं है; अत: दु:खी होता है। कदाचित् काकतालीय न्याय से कार्य सिद्धि हो भी जाये तो तत्काल अन्य कषाय पैदा हो जाती है; अत: दु:खी ही रहता है।

प्रश्न : चारित्रमोह के दु:ख से निवृत्ति का सच्चा उपाय क्या है ?

उत्तर : जब सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र से वस्तुस्वरूप को यथावत् समझे तब इष्ट-अनिष्ट बुद्धि मिटे। ऐसा होने पर कषायों का अभाव हो तब उनकी पीड़ा दूर हो, प्रयोजन कुछ रहे नहीं। निराकुल होने से महासुखी हो; अत: रत्नत्रय की प्राप्ति ही दु:ख मेटने का सच्चा उपाय है।

प्रश्न : वेदनीय कर्म का क्या कार्य है ?

उत्तर : वेदनीय कर्म के उदय से दु:ख-सुख के कारणों का संयोग होता है। उसमें कई तो शरीर की अवस्था में निमित्तभूत होते हैं और कई बाह्य वस्तुओं के संयोग में निमित्तभूत होते हैं। वहाँ असाता के उदय से शरीर तथा उसकी अवस्थाओं को निमित्तभूत बाह्य प्रतिकूल अवस्था का संयोग होता है और साता वेदनीय के उदय से अनुकूल संयोग होता है।

प्रश्न : वेदनीय कर्म के उदय में जीव दु:खी किस प्रकार होता है ?

उत्तर : मोह के कारण यह जीव साता-असाता कर्म के उदय से प्राप्त अनुकूल-प्रतिकूल सामग्री को बनाये रखना या दूर हटाना चाहता है; परन्तु इसकी इच्छा के अनुसार वस्तु परिणमित नहीं होती और यह जीव आकुलित होकर दु:खी होता रहता है।

प्रश्न : वेदनीय और नामकर्म के उदय से होने वाले दु:ख की निवृत्ति का क्या उपाय है ?

उत्तर : सम्यग्दर्शन होने पर वस्तुस्वरूप की यथार्थ समझ आती है, तब

परवस्तु सुख-दु:ख का कारण भासित नहीं होती और मोह का अभाव होने पर अनेक कारण मिलने पर भी स्वयमेव सुख-दु:ख का वेदन नहीं होता। इसप्रकार सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्राप्ति से वेदनीय कर्मोदयजन्य दु:ख की निवृत्ति होगी।

प्रश्न : आयु कर्मोदयजन्य दु:ख का वर्णन कीजिये।

उत्तर : आयु कर्म के उदय से पर्याय धारण करना जीवितव्य है और पर्याय का छूटना मरण है।

यह जीव मोह से पर्याय को ही आप रूप अनुभवता है; अत: पर्याय के नाश से अपना नाश होगा इसप्रकार मरण से डरता है; परन्तु आयुकर्म के पूर्ण हुये बिना अनेक कारण मिलने पर भी मरण नहीं होता और आयुकर्म की स्थिति पूर्ण होते ही 1 समय भी पर्याय नहीं रहती, मरण होता ही है। अत: मरण से बचने के यह जो उपाय करता है, वे झूठे ही हैं। यह वृथा ही आकुलित होता है।

प्रश्न : आयुकर्म के उदयजन्य दु:ख की निवृत्ति का सच्चा उपाय क्या है?

उत्तर : आयुकर्म के उदयजन्य दु:ख से निवृत्ति का सच्चा उपाय तो यह है कि जब सम्यग्दर्शनादि से पर्याय में अहं बुद्धि छूट जाये, अपने त्रिकाल स्वभाव में अहं बुद्धि आये, पर्याय को स्वांग समान जाने तब मरण का भय नहीं रहता।

प्रश्न : नामकर्म के उदय से होने वाले दु:ख का वर्णन कीजिये।

उत्तर : नामकर्म के उदय से गति, जाति, शरीरादि उत्पन्न होते हैं। इसमें पुण्य के उदय में अनुकूल और सुख के कारण रूप तथा पाप के उदय में प्रतिकूल और दु:ख के कारण रूप अनेक अवस्थाओं का संयोग होता है। इसमें यह जीव अनुकूल संयोगों को बनाये रखना और प्रतिकूल संयोगों को दूर हटाना चाहता है, जो इसके आधीन नहीं है, जिससे यह आकुलित होता है।

प्रश्न : गोत्रकर्म के उदय से होने वाले दु:ख और उसकी निवृत्ति का उपाय बताइये।

उत्तर : गोत्रकर्म के उदय से यह जीव उच्च-नीच कुल में उत्पन्न होता है। उच्च कुल में उत्पन्न होने से अपने को बड़ा और नीच कुल में उत्पन्न होने से अपने को नीचा मानता है। अत: उच्च कुल वाले को नीचे कुल में जाने का भय निरंतर रहता है और नीच कुल वाला तो नीचपने के कारण सतत् दु:खी अनुभव करता रहता है। सम्यग्दर्शन होने पर कुलों का परिभ्रमण समाप्त होकर सबसे ऊँचे सिद्ध पद की प्राप्ति होती है। **– पीयूष जैन, संयोजक**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

डलास में अभूतपूर्व धर्मप्रभावना

यहाँ (डलास एवं टेक्सास) में जैन सोसायटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास के तत्त्वावधान में दिनांक 6 से 16 जून तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा योगसार, श्रेणी के गुणस्थान एवं तत्त्वार्थसूत्र विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। पण्डित विपिनजी शास्त्री द्वारा नियमसार एवं समयसार के निर्जरा अधिकार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

शनिवार व रविवार को दो दिवसीय शिविर के आयोजन में दोनों विद्वानों द्वारा लगभग 8 घंटे ज्ञानगंगा प्रवाहित हुई। जिसमें प्रवचनों के अतिरिक्त शंका-समाधान एवं नित्यनियम पूजन का कार्यक्रम रखा गया।

समस्त कार्यक्रम श्री अतुलभाई खारा के कुशल निर्देशन में संपन्न हुये।

18वाँ वार्षिकोत्सव संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ श्री डालचंद कमलश्रीबाई दिगम्बर जैन सार्वजनिक न्यास भोपाल द्वारा संचालित 1008 श्री सीमन्धर जिनालय का 18वाँ वार्षिक उत्सव दिनांक 19 से 26 जून तक सानन्द संपन्न हुआ। इसके अन्तर्गत श्री अष्टपाहुड़ महामंडल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा अष्टपाहुड़ ग्रन्थ पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। कार्यक्रम में सैंकड़ों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में श्री सुनीलजी धवल भोपाल, श्री अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा, श्री अशोकजी उज्जैन, श्री सम्मेदजी इन्दौर के सहयोग से संपन्न हुये।

– पदम कुमार जैन

प्रकाशन तिथि : 13 जुलाई 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127